

तनीलाभ 20. सुवर्णाभ ad ÇĀK. 6, 5. गर्दभाभ von der Farbe des Esels H. 1240. सितकाचाभ 1243. कमलगर्भाभा MBh. 1, 6567. सुरगर्भाभि HIp. 4, 27. चन्द्राभवक्त्र N. 24, 9. (शराणाम्) श्राणीविषाभानाम् MBh. 3, 1350. वानेरन्द्रं महेन्द्राभम् R. 1, 16, 11. 6, 37, 64. (च्युते) यमहूताभम् PĀNĀT. I, 62. महत्स-  
लाभ RAGH. 2, 10. — Vgl. अचिराभा.

श्राभाति (wie eben) f. dass. (ह्याप) RĀĀN. im ÇKDr. shade; light WILS.  
श्राभाष (von भाष् mit श्रा) m. Anrede, Rede: श्राभाषस्ते किमु न विदितः  
खण्डितः पण्डितः स्यात् ÇĀNTI. 3, 18. मधुराभाष adj. R. 3, 26, 12. f. श्रा  
5, 67, 15. 6, 10, 15.

श्राभाषण (wie eben) n. das Anreden, Reden AK. 1, 1, 5, 16. संबन्धमा-  
भाषणपूर्वमाहुः RAGH. 2, 58.

श्राभाष्य (wie eben) adj. anzureden, der Anrede würdig: कथमेकपदे  
निरागतं जनमाभाष्यमिमं न मन्यसे RAGH. 8, 47.

श्राभास् (von भास् mit श्रा) Glanz, Licht: चञ्चलाभासः (विद्युत्) MBh. 3,  
10980.

श्राभास (wie eben) m. Glanz, Licht, Farbe, Aussehen: (गदो) भास्करा-  
भासात् R. 6, 77, 17. नभश्च रुधिरभासम् 3, 29, 9. ताम्बवाभासा (श्रौष्ठो) Suçr.  
1, 114, 19. सर्वेन्द्रियगुणाभासं सर्वेन्द्रियविवर्जितम् ÇVETĀÇ. Up. 3, 17 =  
Bhāg. 13, 14. चिदाभास BĀLAB. 33. 37. सत्यगजाभास das Aussehen eines  
wirklichen Elefanten habend KATHĀS. 12, 16. der blosse Schein, das  
blosse Abbild einer Sache, trügerische Erscheinung: हेत्वाभास Schein-  
grund Z. d. d. m. G. 7, 287. Bṛāṣhāp. 70. MADHUS. in Ind. St. 1, 18, 4 v.  
u. भावतद्भासादयः ŚĀH. D. 7, 1. रसाभासः 13. युक्तिवाक्यतद्भाससमाश्र-  
याः ÇĀMĀ. in WIND. Sankara 94. VEDĀNTAS. in BENF. Chr. 214, 16. 17. 215,  
19. 219, 11.

श्राभासन (von भास् im caus. mit श्रा) n. das Verdeutlichen, Klarmachen:  
समाधिस्तु तद् (ध्याने) एवार्थमात्रभासनत्रयकम् H. 85.

श्राभासुर (von भास् mit श्रा) m. Name einer Götterordnung (60 an der  
Zahl) H. ç. 4. — Vgl. d. folg. Wort.

श्राभास्वर (wie eben) m. N. einer Götterordnung (nach den Erklärern  
aus 64 Göttern bestehend) AK. 1, 1, 1, 5. VJUP. 82. BURN. Intr. 202. 611.  
fg. — Vgl. श्राभासुर.

श्राभिचरिणिक adj. zum Fluch (श्राभिचरण) dienend: मल्ल KĀTJ. Çr. 1, 10, 14.

श्राभिचारिक (von श्राभिचार) 1) adj. f. श्रा auf das Zaubern bezüglich:  
विद्याः Bṛh. DEV. in Ind. St. 1, 120, 14. — 2) n. Zaubер KAUC. 23. 47.

श्राभिजन (von श्राभिजन) adj. zur Abstammung in Beziehung stehend:

तां पार्वतीत्याभिजनेन नाम्ना — वन्धुजनेन गुक्त्वा KUMĀRAS. 1, 26.

श्राभिजात्य (von श्राभिजात) n. das Wesen eines Mannes von edler Her-  
kunft, Adel R. 2, 33, 15. वाचः H. 68.

श्राभिजित 1) adj. unter dem Sternbilde Abhihit geboren P. 4, 3, 36. —  
2) patron. f. ई von श्राभिजित P. 5, 3, 118. Verz. d. B. H. 53, 20.

श्राभिजित्य patron. von श्राभिजित् P. 5, 3, 118.

श्राभिधा f. und श्राभिधातक (!) n. Wort ÇABDAR. im ÇKDr. — Vgl. श्रा-  
भिधा und श्राभिधान.

श्राभिप्रतारिण patron. von श्राभिप्रतारिन् AIR. Br. 3, 48.

श्राभिप्रविक adj. auf den श्राभिप्रव (s. d.) bezüglich ĀÇV. Çr. 7, 5.

श्राभिमुख्य (von श्राभिमुख) n. 1) die Richtung nach Etwas hin P. 2, 1,  
14. विशेषात्परिपूर्णास्य याति शत्रोरमर्षिणः । श्राभिमुख्यं शशाङ्कस्य यथा-

यापि विद्युत्तुदः ॥ PĀNĀT. I, 370. विशेषादाभिमुख्येन चरतो व्यभिचारिणः  
ŚĀH. D. 63, 18. 64, 1. — 2) das nach Etwas hin gerichtete Begehren, Ver-  
langen: श्रावणाभिमुख्यम् P. 8, 2, 99, Sch.

श्राभिद्वयक n. nom. abstr. von श्राभिद्वय gaṇa मनोज्ञादि zu P. 5, 1, 133.

श्राभिद्वय्य n. dass. P. 8, 1, 8, Sch.

श्राभिपित्त adj. von श्राभिपित्त gaṇa संकलादि zu P. 4, 2, 75.

श्राभिषेचनिक adj. f. ई auf das Weihnen zum Königthum (श्राभिषेचन)

bezüglich, dazu dienend: °के पर्व धर्मराजस्य MBh. 1, 350. श्राभिषेचनिकं  
यते रामार्थमुपकल्पितम् । भरतस्तद्वाप्तौ 3, 15970. R. 2, 79, 4. 6. 10. 6,  
112, 69. श्राभिषेचनिको क्रियाम् 2, 22, 26.

श्राभिकारिक n. Gemach (?) R. 2, 63, 10. — adj. (von श्राभिकार) mit  
Gewalt oder Betrug genommen WILSON.

श्राभीक n. N. einer Sāman-Weise KĀTJ. Çr. 25, 14, 15. BENF. zu SV.  
I, 5, 1, 3. II, 1, 2, 9, 19.

श्राभीक्षा n. = श्राभीक्ष्य, auch adj. ÇABDAR. im ÇKDr.

श्राभीक्ष्य (von श्राभीक्षा) n. beständige Wiederholung P. 3, 2, 81. 4, 22.  
8, 1, 4, Sch. Vop. 26, 219.

श्राभीर 1) m. N. pr. eines Volkes MBh. 2, 1192. 1332. 3, 12840. 14, 832. 16,  
223. 270. R. 4, 43, 5. 19. VARĀH. Bṛh. S. 14, 12. 18 in Verz. d. B. H. 241. VP.  
189. 193. 474. 481. PRAB. 88, 1. श्राभीरदेशे किल चन्द्रकात् त्रिभिर्वरिः वि-  
पणति गोपाः PĀNĀT. I, 88. Vgl. LIA. I, 539. 799. II, 589. fgg. — 2) m.  
Kuhhirt AK. 2, 9, 57. H. 889. BURN. Intr. 150. 424. Nach M. 10, 15 der Sohn  
eines Brahmanen von einem Ambashīha-Mädchen. वैश्यभेद एव श्रा-  
भीरो गवाक्षुपजीवी H. 522, Sch. f. °री AK. 2, 6, 1, 13. H. 522. Vop. 5, 6.  
— 3) Name eines Metrums COLEBR. Misc. Ess. II, 156 (30). — 4) °री  
(nämlich भाषा) die Sprache der Ābhīra COLEBR. Misc. Ess. II, 68.

श्राभीरपत्नि (RĀJAM. zu AK.) oder °स्त्री (श्रा° + प°) f. Standort von  
Kuhhirten AK. 2, 2, 20.

श्राभीरपत्निका (श्रा° + प°) f. dass. H. 1002.

श्राभील (von भी mit श्रा) 1) adj. Furcht erregend, schrecklich AK. 1,  
2, 2, 4. TRIK. 3, 1, 7. 3, 381. H. ç. 87. an. 3, 625. MED. I. 61 (श्रील). रात्रौ  
निशये स्वामीले MBh. 3, 388. — 2) n. Schmerz AK. TRIK. 3, 3, 381. H. 1371.  
H. an. MED.

श्राभीश्व n. N. einer Sāman-Weise KĀTJ. Çr. 25, 14, 15. BENF. zu  
SV. I, 3, 1, 2, 6. 5, 1, 3, 3.

श्राभूर् adj. 1) leer: श्राभूरस्य नियङ्गधिः VS. 16, 10. तुच्छोना-वर्षिकित्तं  
यदासीत् RV. 10, 129, 3. — 2) leerhändig, karg: सत्पृथृतं वृत्तिनायत्तमा-  
भुम् RV. 10, 27, 1. त्रिनामि वेत्तेम श्रा सत्तमाभुम् 4. — Vgl. श्राभूक.

श्राभूर् (von भूर् mit श्रा) adj. tüchtig, nachhaltig, wirksam: श्राभूरिन्द्रः  
श्राययन्ननाभवः RV. 1, 31, 9. इध श्राभूर्यु 56, 3. गिरः समञ्जे विदयेऽश्राभुवः 64,  
1, 6. रयिं देदात्याभुवम् 133, 7. दत्तमाभुवम् 131, 4. श्राभूरिन्द्र तृवर्षिः 5,  
33, 3. — Vgl. श्राभूति, श्राभू, स्वभू.

श्राभूक (von श्राभु) adj. inhaltslos, kraftlos: यथा यमस्य वा गृहे ऽरुसं  
प्रतिचाकेशानाभूकं प्रतिचाकेशान् AV. 6, 29, 3.

श्राभूति (von भूर् mit श्रा) 1) f. Tüchtigkeit, lebendige Wirksamkeit: श्रा-  
भूत्या सकृन्ना वञ्च सायक RV. 10, 84, 6. श्राभूतिरेषा भूतिवर्जिता त्रिधीयते  
AIR. Br. 7, 13. — 2) m. N. pr. eines Mannes ÇĀT. Br. 14, 5, 3, 22. 7, 3, 28  
= Bṛh. Ār. Up. 2, 6, 3. 4, 6, 3.